खुले आम शराब पी जायेगी

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया खुले आम शराबे पी जाने लगेगी ये भी एक ऐसा काम है के जब उम्मत उसमे मुब्तेला होगी तो वो आज़माइश का शिकार होगी इब्तेदाएँ इस्लाम मे शराब के उपर पाबन्दी नही थी और अरब लोग शराब के बडे आदी थे बडे शोकीन थे उनके यहा अरबी जुबान मे शराब के लिये बहुत सारे अल्फाज़ है जो शराब के माना को बतलाते और जाहिर करते है बल्के बाज़ तारीख लिखने वालो ने लिखा है के जब बच्चा पैदा होता था तो उसके मुंह मे सब से पेहले शराब टपकाइ जाती थी और शराब को वो बडा अच्छा समझते थे. उसके बाद जब इस्लाम आया तो शराब पर धीरे धीरे कंट्रोल किया और बतलाया के इस शराब मे फायदे से ज़्यादा नुकसानात बहुत है.

शुरू इस्लाम मे शराब की हुरमत और मुमानत का हुकम नाजील नही हूवा था इस्तेमाल की जाती थी जब हज़राते मुहाजिरीन हिजरत करके मदीना मुनव्वरह गये उस वकत भी शराब का सिलसिला जारी था अलबत्ता हर दौर मे हर ज़माने मे कुछ समझदार लोग होते है जो ऐसी नुकसान देने वाली चीझो के नुकसान को मेहसूस करते है तो शराब के नुकसान को मेहसूस करते हुवे बाज़ हज़राते सहाबा (रदी) जैसे के हजरत उमर (रदी) हजरत मुआज बिन जबल (रदी) और भी बाज़ सहाबा के नाम बताये जाते है वो रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत मे हाज़ीर हुवे और शराब के मुताल्लीक दरयाफत किया.

कुरान मे शराब की हुरमत एक दम से नाजील नही हुई है इस्लाम जो है वो इन्सान के मिजाज़ की और उसकी तबीयत की बडी रिआयत करता है एक आदमी किसी चीझ का आदी हो किसी चीझ की उसको आदत पड गई हो और आप उसको एक दम से उससे रोक दे तो ये चीझ उसकी सिहत के ऍतेबार से भी नुकसान देने वाली होती है और उसके लिये

मुश्कील भी हो जाता है.

चुनांचे शराब की हुरमत की वजह के तीन मरहले इस किताब मे बताये है:

(1) इस्लाम ने शराब को हराम करार देने के मामले मे धीरे धीरे जिसको गुजराती है तब्कावार केहते है वो तरीका इख्तियार किया चुनांचे जब रसूलुल्लाहﷺ से शराब के मुताल्लीक उन हज़रात ने पूछा के ऍ अल्लाह के रसूल शराब के बारे मे शरीयत किया केहती है? तो फौरन कुरान मे ये आयत नाजील हुई के ऍ अल्लाह के नबी ये लोग आप से शराब और जुऍ के मुताल्लीक पूछते है तो आप केह दिजिये के उसमे बडे गुनाह के काम भी है और कुछ फायदे भी है लेकिन उसका गुनाह फायदे से बडकर है. (सू. बकरा/19)

तो जो समझदार थे वो समझ गये के कुरान की इस आयत मे शराब को हराम नही किया गया लेकिन ये बतलाया गया के उसका नुकसान नफा से ज़्यादा है गोया एक मशवरा दिया जा रहा है, चुनांचे इस आयत के नुज़ूल के बाद बहुत

से हज़रात ने शराब पीना छोड दिया कुछ हज़रात ने ये सोचा के शराब मे अगरचे कुछ नुकसान है लेकिन उसमे जो नुकसान है हम उस नुकसान से खूद को बचाने का ऍहतेमाम करते हुवे शराब का इस्तेमाल करेंगे इसलीये के अभी तक उसको मना और नाजाइज़ करार नही दिया है तो उन्होने उस सिलसिला अब भी जारी रखा और बहुत सो-ने अपने तौर पर छोड दिया और मशवेरा को कबूल किया.

(2) उसके बाद एक मरतबा ऐसा हूवा के हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ ने कुछ लोगो की दावत की उसमे शराब रखी हुई थी कयू के वो अभी हराम नही हुई थी सब जान्ते है और देखते भी है के जहा जहा इस शराब को ममनून नही समझा जाता और उसपर पाबन्दी नही होती वहा कोई दावत बगैर शराब के नही होती इसी तरह उस दावत मे भी शराब रखी हुई थी पीने वालो ने पी रखी थी और मगरिब का वकत आ गया और उसी हाल मे नमाज के लिये खडे हो गये जो इमाम था उन्हो सूरऍ काफिरून की तिलावत की जिस्का

तर्जुमा है के ऍ काफिरो तुम जिस्की इबादत करते है मे भी उसी की इबादत करता हु हाला के कुरान मे 'ला अअबुदु मा तअबुदु' के तुम जिन्की इबादत करते हो मे उनकी इबादत नही करता लेकिन "ला" को छोड दिया और नशे मे पता भी नही चला तो उसके फौरन बाद कुरान की एक दूसरी आयत नाजील हुई- ऍ इमान वालो तुम नशे की हालत मे नमाज के करीब मत जावो.

(3) उसके बाद एक मरतबा ऐसा हूवा के हजरत उत्बान बिन मालिक (रदी) ने लोगो की दावत की ये हजरत उत्बान बिन मालिक (रदी) खूद अन्सारी है तो उस दावत मे अन्सार भी थे मुहाजिरीन भी थे अब ये शराब ऐसी खतरनाक चीझ है के आदमी जब उसको पीता है तो पीने के नतीजे मे उसकी अकल और होश और हवास खतम हो जाते है पता ही नही चलता के वो किया कर रहा है किया बोल रहा है ऐसी हरकते करता है के अगर होश मे आने के बाद उसको बताया जाये तो वो खूद भी शरमीन्दा हो.

जब आदमी शराब के नशे मे मश्त होता है तो उसको पता ही नही चलता के मे किया कर रहा हु, वो होश और हवास गुम किये हुवे थे अरब मे एक पुराना दस्तूर ये भी था के जब मुख्तलिफ कबाइल के लोग जमा होते थे तो हर कबीले वाला अपने कबीले की खूबीया कमालात और उनकी जो चीझे मश्हूर होती थी उनको बयान करता था और दूसरे कबीले की बुराइया करता था.

उस मोके पर हजरत सअद बिन अबी वक्कास (रदी) ने मुहाजिरीन के फ़ज़ाइल और कमालात और अन्सार की तन्कीस और बुराइया बयान करनी शुरू की तो वहा जो अन्सार थे उनको भी गुस्सा आ गया एक नवजवान थे एक ताज़ा उंट ज़बह किया गया था उसके शाने की बाज़ु की हड्डी होती है वो ज़रा चोडी होती है वो लेकर के मारी तो उनका चेहरा ज़ख्मी कर दिया बहुत सी रिवायतो मे ये भी है के बहुत सारे लोग आपस मे घुत्तम घुत्ता हो गये जब होश आया तो देखा के किसी का सर फटा हूवा है किसी का चेहरा ज़ख्मी

है किसी दाढी नोची हुई है तो आपस मे एक दूसरे के लिये दुश्मनी पैदा हो गई.

इसकी शिकायत रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत मे की गई तो कुरान की ये आयत नाजील हुई- बेशक शराब और जूवा और ये बुत और सुगुन निकालने के तीर जो उनके यहा हूवा करते थे ये सब गन्दी चीझे है शैतान का काम है तुम उससे बचो शैतान चाहता ही यही है के तुम्हारे दरमीयान शराब और जूवे के जरिया दुश्मनावट और कीना पैदा करे और तुम्हे अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज से रोकना चाहता है. (सू. माइदा 90,91)

जिस दिन शराब की मुकम्मल हुरमत आयी तो उसके बारे मे आता है के मदीने मे उस दिन कसरत से शराब बही है जैसे तेज़ बारिश मे सारी नालीया पानी से भर कर बहने लगती है और मुद्दतो तक ऐसा हूवा के बारिश होती थी तो उसके पानी मे शराब का रंग और उसकी बदबू जाहिर होती थी उनके दिलो मे इस्लामी अहकाम पर अमल का ऐसा ज़ज्बा था की सभी हज़रात ने शराब घर से बाहर निकाल कर फेक दी,

और बहुत से लोगो के पास तिजारती शराब भी थी रसूलुल्लाहﷺ ने उनसे भी फरमाया के भाई तुम्हारे गोडाउन मे जितनी भी शराब वाला माल है लाकर जमा करावो चुनांचे सब ने लाकर जमा कर दिया.

जब शराब की हुरमत आई तो उसके बारे बडा सख्त पेहलु इख्तियार किया गया चुनांचे हदीस मे आता है के अल्लाह ने शराब के बारे मे दस लोगो पर लानत और फिटकार फरमायी है:

(1) बनाने वाले पर.

(2) बनवाने वाले पर.

(3) बेचने वाले पर.

(4) उसकी कीमत खाने वाले पर.

(5) खरीदने वाले पर.

(6) जिसके लिये खरीदा जा रहा उसके उपर.

(7) पीने वाले पर.

(8) पीलाने वाले पर.

(9) उठाकर ले जाने वाले पर.

(10) जिसके लिये उठाकर ले जा रहा है उसके उपर.

रसूलुल्लाहﷺ का इरशाद है के मे अल्लाह की कसम खाकर के ये बात केहता हु के मुजे जिब्रइल (अल) ने बतलाया के जा आदमी शराब का आदी हो वो ऐसा है जैसे बुत परस्त बुतो की पूजा करने वाला और रसूलुल्लाहﷺ फरमाते है के बुत परस्ती के बाद सब से पेहली चीझ जिस्से अल्लाह ने मुजे मना फरमाया वो शराब नोशी है और हदीस मे ये भी आता है के रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जो शराब का आदी हो वो ऐसा है जैसे बुतो की पूजा करने वाला होता है जैसे लात और उज़्ज़ा जो ज़माना ऍ जाहिलीयत के बुत है उनकी पूजा करने वाले जैसा बाज़ रिवायतो मे तो यू भी है के जो शख्स शराब का आदी हो और बगैर तौबा के मरेगा तो अल्लाह के सामने बुत परस्तो की शकल मे पेश किया जायेगा मेदाने हशर मे. तो इससे मालूम हूवा के शराब पीने पर सख्त वइद हुई है. अल्लाह तमाम उम्मते मुहम्मदीया को इस बुरी आदत से हिफाज़त फरमाये.